Changing Ways
बदलती राहें
(साप्ताहिक)

वर्ष 01, अंक 07, पृष्ठ : 04 मूल्य - 4 रूपये धर्मशाला, 22 फरवरी 2016 हर सोमवार को प्रकाशित

महामृत्युंजय मंदिर का अधिग्रहण करेगी सरकार

मंडी। विवादों में घिरे मंडी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के महामत्युंजय मंदिर का अब अधिग्रहण होगा। हिमाचल प्रदेश सरकार की कैबिनेट की बैठक में मंडी के इस ऐतिहासिक मंदिर को हिमाचल प्रदेश चैरीटेबल एंडोनमेंट एक्ट के तहत सरकारी नियंत्रण में लेने की मंजूरी दी गई है। इससे इस मंदिर के साथ जुड़े सारे विवादों का अंत हो जाएगा। अब इस मंदिर का अधिग्रहण कर इसे मंदिर अधिकारी के रूप में तहसीलदार के नियंत्रण में लिया जाएगा।

मंडी शहर के थनेहड़ा मुहल्ला के साथ ऐतिहासिक जैंचू नौण के पास स्थित महामृत्युंजय मंदिर का निर्माण पाषाण शिखरकाल शिवालय के रूप में राजा सिद्धसेन के शासनकाल 1684-1772 के दौरान किया गया है। इस मंदिर के गर्भगृह में कमल प्रसतर आसन पर करीब पौना मीटर ऊंची महामृत्युंजय की प्रतिमा आसीन है। महामृत्युंजय की यह मूर्ति हठयोग के चौरासी आसनों में से एक प्रधान आसन में विद्यमान है। महामृत्युंजय का उत्तरी भारत का एकमात्र मंदिर है। इसके पुरातन स्वरूप से छेड़छाड़ किए जाने के बाद पुलिस प्रशासन भी हरकत में आया था। टाउन एंड कंट्री प्लानिंग महकमा भी सक्रिय हो गया। इस बारे में नगर परिषद मंडी को टाउन एंड कंट्री प्लानिंग एक्ट के तहत कार्रवाई कारने के निर्देश दिए गए। नगर एवं ग्राम योजनाकार मंडी की ओर से कार्यकारी अधिकारी नगर परिषद मंडी को लिखे गए पत्र में अवैध निर्माण रोकने तथा इस बारे में दोषियों के खिलाफ कार्रवाई अमल में लाने का आग्रह किया था।

15 साल तक के ओबीसी छात्रों को भी मिलेगा शिक्षा लोन

धर्मशाला। हिमाचल पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम के अध्यक्ष चंद्र कुमार ने कहा कि निगम ने अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित विद्यार्थियों को बड़ी संख्या में लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से शिक्षा ऋण प्राप्त करने की न्यूनतम आयु सीमा को 15 वर्ष करने का निर्णय लिया है। अभी तक शिक्षा ऋण प्राप्त करने की न्यूनतम आयु सीमा 18 वर्ष थी। निगम ने अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित आईटीआई प्रशिक्षुओं को शिक्षा ऋण की परिधि में लाने का मामला केंद्र सरकार के समक्ष उठाने का निर्णय लिया है।

चंद्र कुमार हिमाचल पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम के निदेशक मंडल की 32वीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। ...शेष पृष्ठ 2 पर

मुख्यमंत्री ने भोरंज को समर्पित की 27.50 करोड़ की योजनाएं

भोरंज। मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने हमीरपुर जिले के तीन दिवसीय प्रवास के अंतिम दिन भोरंज विधानसभा क्षेत्र में 27.50 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास किए। उन्होंने जाहू में 17.52 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 132 किलोवाट विद्युत उपकेंद्र का लोकार्पण किया। इस केंद्र से न केवल क्षेत्र में कम वोल्टेज की समस्या हल होगी बल्कि, ट्रांसमिशन एवं वितरण नुकसान भी कम होगा। यह केंद्र भोरंज विधानसभा क्षेत्र के 50 गांवों की 75 हजार आबादी के अतिरिक्त, मंडी जिले के धर्मपुर और गोपालपुर क्षेत्रों के 372 गांवों के लगभग 2.25 लाख लोगों को निर्बाध विद्युत आपूर्ति प्रदान करेगा। कुल मिलाकर 132 के.वी. उपकेंद्र से लगभग तीन लाख की आबादी लाभान्वित होगी।

बहु-उद्देशीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा मंत्री सुजान सिंह पठानिया ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर लीची के पौधे का रोपण भी किया। वीरभद्र सिंह ने भोटा शहर के लिए वर्ष 2048 तक आबादी को ध्यान में रखते हुए 9 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली मलनिकासी योजना की आधारशिला भी रखी।

मुख्यमंत्री ने ग्राम पंचायत भुक्कर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुक्कर में 75.52 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले अतिरिक्त खण्ड की आधारशिला भी रखी। उन्होंने ग्राम पंचायत अमरोह में राजकीय उच्च पाठशाला अमरोह को वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला स्तरोन्नत करने की भी घोषणा की।

बद्दी में 102.32 करोड़ के प्रौद्योगिकी विकास केंद्र का शिलान्यास

बद्दी। केंद्रीय मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्यम मंत्री कलराज मिश्र ने मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के साथ सोलन जिला के बद्दी में 102.32 करोड़ रुपये के केंद्रीय मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्यम टूल रूम/प्रौद्योगिकी विकास केंद्र (टीडीसी) का शिलान्यास किया। यह टूल रूम भारत सरकार के प्रौद्योगिकी केंद्र प्रणाली कार्यक्रम के अंतर्गत स्थापित किया जाएगा।

मिश्र ने इस अवसर पर प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आ रहे बदलाव के मद्देनजर इन केंद्रों की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि विश्व बैंक ने भारत में 15 स्थानों पर इस तरह के प्रौद्योगिकी केंद्रों को स्थापित करने के लिए 2200 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं। इसके लिए, अब तक 10 विभिन्न स्थानों का चयन किया गया है। उन्होंने हिमाचल सरकार द्वारा केंद्र के लिए 20 एकड़ भूमि नि:शुल्क उपलब्ध करवाने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह प्रौद्योगिक केंद्र/टूल रूम वीरभद्र सिंह का ड्रीम प्रोजेक्ट है। इस तरह के प्रौद्योगिकी केंद्र जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, उत्तराखंड व अन्य स्थानों पर भी बनाए जाएंगे, जहां एक लाख युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा। यहां से प्रशिक्षित युवा अपनी औद्योगिक इकाइयां स्थापित कर सकेंगे और बड़े उद्योगों में रोजगार भी प्राप्त कर सकेंगे।

उन्होंने कहा कि यह टूल रूम युवाओं को गुणात्मक प्रशिक्षण प्रदान करेगा और यह पर्यावरण मित्र भी होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री स्वदेशी उत्पादों पर बल दे रहे हैं। कौशल भारत के लक्ष्य को हासिल कर भारत को उत्पादक देश बनाने के लिए प्रयासरत हैं। इसके परिणामस्वरूप, देश के उत्पाद विश्व स्तर पर मेक इन इंडिया के नाम से बिक सकें। उन्होंने कहा कि उनका मंत्रालय हिमाचल के ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने के लिए हर संभव सहायता उपलब्ध करवाएगा। इससे यह राज्य मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म इकाइयों का केंद्र बनेगा।

मिश्र ने कहा कि यह टूल रूम भारत सरकार के प्रौद्योगिकी केंद्र प्रणाली कार्यक्रम के अंतर्गत स्थापित किया जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य तकनीकी व कौशल श्रमशक्ति तैयार कर उद्योगों को सहायता करना और विकास एवं अभियांत्रिकी समाधान विकसित करना है। उन्होंने मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्यम मंत्रालय की विभिन्न केंद्रीय योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मंत्रालय ग्रामीण स्वरोजगार संस्थानों को सुदृढ़ करने का भी कार्य कर रहा है। ऑनलाइन पंजीकरण के लिए भारत सरकार ने एक पेज का प्रावधान किया है, जिसे भरने के बाद उद्यमियों को सुविधा उपलब्ध होगी।

केंद्रीय मंत्री ने भारत सरकार के बहुद्देशीय विकास प्रशिक्षण केंद्र को कनेड से मंडी जिला के सुंदरनगर बदलने की भी घोषणा की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने केंद्रीय मंत्री का स्वागत किया तथा कहा कि इस केंद्र में परामर्श एवं सुझाव सेवाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी। इसके अतिरिक्त, इस टूल रूम से गुणात्मक प्रणाली व उत्पादकता में सुधार के अभियांत्रिकी समाधान उपलब्ध होने के साथ-साथ प्रशिक्षित एवं अप्रतिशिक्षत श्रमशक्ति को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे।

मुख्यमंत्री ने कलराज मिश्र का आभार प्रकट करते हुए कहा कि यह परियोजना जब वह मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्यम केंद्रीय मंत्री थे, तब उन्होंने इसे बनाने का संकल्प लिया था। उन्होंने विश्वास जताया कि जब इस तकनीकी केंद्र का कार्य पूरा होगा प्रदेश के प्रशिक्षित युवाओं की दक्षता बढ़ेगी और डिजाइनिंग कोर्स में उन्हें रोजगार उपलब्ध होगा।

डायरेक्ट इश्क फिल्म में धमाल मचाएगा मंडी का गबरू

मंडी। बॉलीवुड फिल्म डायरेक्ट इश्क में मंडी का गबरू अरूण बहल भी नजर आने वाला है। यह फिल्म शुक्रवार को रिलीज होने जा रही है। अरूण बहल इस फिल्म में अभिनेत्री डॉली पांडे, निधि सुब्बइया के रॉक बैंड में फैंसी नाम के वायलन वादक की भूमिका में हैं। इस फिल्म में बहल की मेहनत और काम देखकर राजीव जी ने उसे अपनी अगली फिल्म सारथी में भी भूमिका सौंप दी है। इसकी शूटिंग पूरी हो चुकी है और जून माह तक प्रदर्शन के लिए तैयार हो जाएगी। इस फिल्म के निर्माता प्रदीप के शर्मा हैं, जबकि राजीव एस रूइया ने निर्देशन किया है। एएम तुराज ने फिल्म की पटकथा और गीत लिखे हैं। जबकि विवेक कार, तनिस्क और शबीर खान ने संगीत दिया है।

मुख्यमंत्री से शुरू करवाएंगे वर्ल्ड कप की टिकट बिक्री: अनुराग

धर्मशाला। एचपीसीए अध्यक्ष एवं बीसीसीआई सचिव अनुराग ठाकुर ने कहा कि टी-20 वर्ल्ड कप की टिकटों की बुकिंग मैच शुरू होने से कुछ दिन पूर्व ही होगी। वहीं विदेशी दर्शकों के लिए दस फीसदी टिकटों की बुकिंग का कार्य जल्द शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्थानीय दर्शकों के लिए टिकट की बुकिंग की शुरुआत वे मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के हाथों करवाना चाहते हैं। इसके लिए मुख्यमंत्री से समय मांगा जाएगा। अगर उन्होंने समय दिया तो मार्च माह के पहले हफ्ते से टिकट बिक्री की शुरुआत कर दी जाएगी।

अनुराग ठाकुर ने यह जानकारी धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में दी। उन्होंने बताया कि धर्मशाला में वर्ल्ड कप के सर्वाधिक मैच आयोजित किए जा रहे हैं। इससे विश्व भर में धर्मशाला का नाम होगा और विश्व भर के पर्यटकों को धर्मशाला के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश के बारे में जानकारी मिलेगी। उन्होंने कहा कि भारत के स्वतंत्र होने और हिमाचल प्रदेश के गठन के बाद से यह पहला मौका है, जब पूरा विश्व इस प्रदेश के क्रिकेट मैदान के जरिये इस प्रदेश के बारे में जानकारी हासिल करेगा।

एक अरब साल की तरंगों का पृथ्वी तक पहुंचना

करीब एक अरब वर्ष पहले अंतरिक्ष में दो ब्लैक होल आपस में टकराकर एक-दूसरे में विलीन हो गए। इस प्रक्रिया में उत्पन्न कंपन से गुरुत्व तरंगें निकलीं जो अंतरिक्ष में भ्रमण करते हुए पृथ्वी पर पहुंचीं और गत सितंबर में वैज्ञानिकों ने पहली बार इन तरंगों की चहक सुनी। वैज्ञानिक इन तरंगों को ग्रेविटेशनल वेव्स भी कहते हैं। इन तरंगों के अस्तित्व के बारे में पिछली एक सदी से अटकलें लगाई जा रही थीं। इनके अस्तित्व के बारे में सर्वप्रथम सैद्धांतिक परिकल्पना अल्बर्ट आइंस्टीन ने की थी। गुरुत्व तरंगों की खोज के लिए स्थापित वेधशाला लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल वेव ऑब्जर्वेटरी (लिगो) के कार्यकारी निदेशक डेविड रिट्ज ने पिछले दिनों वाशिंगटन में गुरुत्व तरंगों की खोज की ऐतिहासिक घोषणा की। यह खोज ब्रह्मांडीय भौतिकी और खगोल विज्ञान के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इन तरंगों के अस्तित्व की निर्णायक रूप से पुष्टि करना सहज नहीं था। वैज्ञानिक पिछले पचास वर्षों से इन्हें खोजने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन इसके लिए उनके पास सटीक उपकरण नहीं थे। अत्यंत संवेदी उपकरण तैयार करने में उन्हें करीब 25 वर्ष लगे। इन्हीं उपकरणों की मदद से अंतरिक्ष में होने वाली असंगतियों को सूक्ष्मतम पैमाने तक ढूंढ़ पाना संभव हो सका।

प्रत्येक ब्लैक होल का द्रव्यमान करीब 30 सूर्यों के बराबर था। जैसे ही गुरुत्वाकर्षण की वजह से दोनों ब्लैक होल एक-दूसरे के करीब आए, उन्होंने तेजी से एक-दूसरे की परिक्रमा आरंभ कर दी। आपस में टकराने से पहले उन्होंने प्रकाश की गति हासिल कर ली थी। उनके उग्र विलय से गुरुत्व तरंगों के रूप में प्रचंड ऊर्जा निकली जो सितंबर में पृथ्वी पर पहुंची। एक अरब साल पहले निकली ऊर्जा सितंबर में पृथ्वी पर पहुंची है। जरा सोचिए अंतरिक्ष में कितनी दूर यह टक्कर हुई होगी।

भौतिकविदों का कहना है कि सितंबर में पृथ्वी पर पहुंचने वाली तरंग दो ब्लैक होल के विलय से पूर्व अंतिम क्षण में उत्पन्न हुई थी। अल्बर्ट आइंस्टीन ने भविष्यवाणी की थी कि दो ब्लैक होल के टकराने पर गुरुत्व तरंगें उत्पन्न होंगी, लेकिन अभी तक किसी ने इनका पर्यवेक्षण नहीं किया था। दिलचस्प बात तो यह भी है कि अभी तक किसी को भी दो ब्लैक होल के बारे में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला था। ब्लैक होल अंतरिक्ष का वह क्षेत्र है, जहां शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण के कारण वहां से प्रकाश बाहर नहीं निकल सकता। इसमें गुरुत्वाकर्षण बहुत ज्यादा इसलिए होता है, क्योंकि पदार्थ को बहुत छोटी जगह में फिट होना पड़ता है। ऐसा तारे के नष्ट होने की स्थिति में होता है। चूंकि यहां से प्रकाश बाहर नहीं आ सकता, इसलिए लोग इन्हें नहीं देख सकते। ये अदृश्य होते हैं। ब्लैक होल छोटे और बड़े दोनों हो सकते हैं। वैज्ञानिकों का खयाल है कि सबसे छोटे ब्लैक होल एक अणु जितने छोटे हैं। ये ब्लैक होल भले ही छोटे हों, लेकिन उनका द्रव्यमान एक पहाड़ के बराबर होता है। बड़े ब्लैक होल स्टेलर कहलाते हैं। उनका द्रव्यमान सूरज के द्रव्यमान से 20 गुना तक ज्यादा होता है। सबसे बड़े ब्लैक होल सुपरमैसिव कहलाते हैं, क्योंकि उनका द्रव्यमान 10 लाख सूर्यों से भी ज्यादा होता है। हमारी मिल्की-वे आकाशगंगा में सुपरमैसिव ब्लैक होल का नाम सैगिटेरियस ए है। इसका द्रव्यमान 40 लाख सूर्यों के बराबर है।

गुरुत्व तरंगों की खोज से पहले ब्लैक होल का पता लगाना मुश्किल था, क्योंकि ये प्रकाश उत्पन्न नहीं करते, जबकि सभी खगोलीय उपकरण प्रकाश का इस्तेमाल करते हैं। यह सफल खोज दुनिया भर के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का नतीजा है। इनमें भारतीय वैज्ञानिक भी शामिल हैं। ब्रह्मांड को अभी तक हमने सिर्फ प्रकाश में देखा है, लेकिन वहां जो घटित हो रहा है, उसका हम सिर्फ एक हिस्सा ही देख पा रहे हैं। गुरुत्व तरंगें ब्रह्मांड की घटनाओं के बारे में बिलकुल अलग किस्म की जानकारी देती हैं। वैज्ञानिकों ने अब अमेरिका स्थित लिगो वेधशाला के अत्याधुनिक डिटेक्टरों के जरिए इन तरंगों को सुनने का एक नया तरीका खोज लिया है। इससे उन घटनाओं और प्रक्रियाओं को खोजने में मदद मिलेगी, जिन्हें हमने अभी तक नहीं देखा है।

गुरुत्व तरंगों पर अनुसंधान से भारत का संबंध भी बहुत पुराना है। पुणे में वर्ष 1988 में इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर ऑफ एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (आईयूसीएए) की स्थापना के बाद उसके प्रथम अध्यक्ष प्रो.जयंत नार्लीकर और उनके सहयोगी संजीव धुरंधर ने भारत में गुरुत्व तरंगों पर अनुसंधान के लिए फंडिंग का प्रस्ताव रखा था, लेकिन वे अधिकारियों को इसके लिए राजी नहीं कर सके थे। अधिकारियों को इतने बड़े प्रोजेक्ट को कार्यरूप देने की उनकी विश्वसनीयता पर पूरा भरोसा नहीं था। बहरहाल प्रो.नार्लीकर ने अंतरराष्ट्रीय टीम में शामिल भारतीय वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए गुरुत्व तरंगों की खोज को एक शानदार उपलब्धि बताया है। प्रोजेक्ट पर काम करने वाली भारतीय वैज्ञानिकों की इंडिगो टीम ने अमेरिका में स्थित दो गुरुत्व तरंग डिटेक्टरों से प्राप्त डेटा के विश्लेषण के लिए विधियां विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आईयूसीएए परिसर में इस डेटा के विस्तृत विश्लेषण के लिए एक विशेष कंप्यूटर भी स्थापित किया जा रहा है।

अब भारतीय वैज्ञानिकों को देश में ही गुरुत्व तरंगों पर गहन अनुसंधान करने का मौका मिलेगा। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने एक अत्याधुनिक गुरुत्व तरंग वेधशाला स्थापित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह अमेरिका की लिगो वेधशाला के सहयोग से स्थापित की जाएगी। भारत की लिगो परियोजना का संचालन परमाणु ऊर्जा विभाग और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा किया जाएगा।

सैनिक की देशभक्ति का कायल हुआ नेपोलियन

शीतकाल चल रहा था। रात का वक्त था और समूचा पेरिस नगर बर्फ की चादर ओढ़े था। इस जानलेवा ठंड में भी वह बरफ जैसी शीतल धरती पर उघाड़े शरीर, बिना कुछ बिछाए बैठा था। जेल विभाग के हर छोटे-बड़े कर्मचारी ने उस बंदी सैनिक को अपने ढंग से समझाने-मनाने का प्रयास किया, लेकिन कोई भी उसे सूती या गरम वस्त्र पहनने या ओढ़ने के लिए तैयार नहीं कर सका। जबकि ठंड के मारे उसके दांत बज रहे थे, मुंह की रंगत उड़ चुकी थी, रगें नीली पड़ रही थीं।

तभी सम्राट नेपोलियन बंदियों का निरीक्षण करते हुए उस ओर भी आ पहुंचे। जेलर ने आगे बढ़कर सम्राट से उस हठीले कैदी के बारे में निवेदन किया, तो एकबारगी वह भी सोच में पड़ गए। उन्होंने पहले भी इस युद्धबंदी के बारे में सुन रखा था। कुछ समय पूर्व हुई फ्रांस और जर्मनी की जंग में जर्मनी की हार के बाद उसे पकड़ा गया था।

नेपोलियन उस बंदी के पास पहुंचे। उससे उन्होंने कई काम की बातें जाननी चाहीं, लेकिन उसकी जुबान से एक शब्द भी नहीं निकला। उसकी यह हालत देख सम्राट नेपोलियन का दिल भी पसीज उठा। उन्होंने उससे कहा - %सैनिक, तुम बेझिझक अपनी समस्या मुझे बताओ। तुरंत उसका समाधान हो जाएगा।

सम्राट के इन आत्मीय शब्दों को सुन उसने कांपते स्वर में कहा - %महोदय, मेरे द्वारा कपड़े न पहनने, ओढ़ने से आप सब परेशान हैं। पर मैं क्या करूं, मैंने स्वदेशी कपड़े ही पहनने, ओढ़ने का ही प्रण ले रखा है। सो आप लोग मुझे क्षमा करें। मैं आपके देश के कपड़ों का इस्तेमाल करने की अपेक्षा अपने प्राण त्यागना बेहतर समझता हूं।

युद्धबंदी का स्वदेश-प्रेम देख नेपोलियन भी नतमस्तक हो गए। उन्होंने जेल अधिकारियों से कहा कि जैसे भी हो, इस देशभक्त बंदी के लिए जर्मन वस्त्रों की शीघ्र व्यवस्था की जाए। यह कह नेपोलियन अन्य कैदियों की ओर बढ़ गए और अधिकारीगण भी आज्ञानुसार तुरंत भागदौड़ करने लगे। किंतु सबेरा होने तक उस युद्धबंदी की मौत हो गई।

नेपोलियन को जब पता चला तो उन्होंने उस देशभक्त को सलाम करते हुए कहा - 'काश, हर देश में ऐसे देशभक्त पैदा हों, जो देश की जमीन को मिट्टी का टुकड़ा न समझ उसे अपनी मां समझें। देश के स्वाभिमान के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर सकें।

पृष्ठ 1 का शेष ...

चंद्र कुमार ने कहा कि वर्तमान प्रदेश सरकार अन्य पिछड़ा वर्ग के आर्थिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए प्रभावी प्रयास कर रही है। प्रदेश सरकार ने हिमाचल पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम के शेयर केपिटल को 11 करोड़ से बढ़ाकर 13 करोड़ करने का निर्णय लिया है, जो प्रदेश सरकार की पिछड़े वर्ग के कल्याण के प्रति वचनबद्ध को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं कौशल उन्नयन के लिए बिना किसी ब्याज के 50 हजार रूपये तक का शिक्षा ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। बैठक में ब्याज रहित शिक्षा ऋण के रूप में प्रदान की जा रही 50 हजार रूपये की धनराशि को अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति से संबंधित विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही धनराशि के समरूप करने का मामला प्रदेश सरकार से उठाने का निर्णय लिया गया।

दर्जी की सीख

एक दिन स्कूल में छुट्टी की घोषणा होने के कारणए एक दर्जी का बेटाए अपने पापा की दुकान पर चला गया ।वहाँ जाकर वह बड़े ध्यान से अपने पापा को काम करते हुए देखने लगा । उसने देखा कि उसके पापा कैंची से कपड़े को काटते हैं और कैंची को पैर के पास टांग से दबा कर रख देते हैं । फिर सुई से उसको सीते हैं और सीने के बाद सुई को अपनी टोपी पर लगा लेते हैं ।

जब उसने इसी क्रिया को चार-पाँच बार देखा तो उससे रहा नहीं गयाए तो उसने अपने पापा से कहा कि वह एक बात उनसे पूछना चाहता है ? पापा ने कहा- बेटा बोलो क्या पूछना चाहते हो घ् बेटा बोला. पापा मैं बड़ी देर से आपको देख रहा हूं , आप जब भी कपड़ा काटते हैंए उसके बाद कैंची को पैर के नीचे दबा देते हैंए और सुई से कपड़ा सीने के बादए उसे टोपी पर लगा लेते हैंए ऐसा क्यो ? इसका जो उत्तर पापा ने दिया, उन दो पंक्तियाँ में मानों उसने ज़िन्दगी का सार समझा दिया ।

उत्तर था- ''बेटा, कैंची काटने का काम करती हैए और सुई जोड़ने का काम करती हैए और काटने वाले की जगह हमेशा नीची होती है परन्तु जोड़ने वाले की जगह हमेशा ऊपर होती है । यही कारण है कि मैं सुई को टोपी पर लगाता हूं और कैंची को पैर के नीचे रखता हूं ।''

स्वामी विवेकानन्द

तुमने बहुत बहादुरी की है। शाबाश! हिचकने वाले पीछे रह जायेंगे और तुम कुद कर सबके आगे पहुँच जाओगे। जो अपना उध्दार में लगे हुए हैंए वे न तो अपना उद्धार ही कर सकेंगे और न दूसरों का। ऐसा शोर - गुल मचाओ की उसकी आवाज़ दुनिया के कोने कोने में फैल जाय। कुछ लोग ऐसे हैंए जो कि दूसरों की त्रुटियों को देखने के लिए तैयार बैठे हैंए किन्तु कार्य करने के समय उनका पता नही चलता है। जुट जाओए अपनी शक्ति के अनुसार आगे बढो इसके बाद मैं भारत पहुँच कर सारे देश में उत्तेजना फूँक दूंगा। डर किस बात का हैघ् नहीं हैए नहीं हैए कहने से साँप का विष भी नहीं रहता है। नहीं नहीं कहने से तो श्नहींश् हो जाना पडेगा। खूब शाबाश! छान डालो, सारी दूनिया को छान डालो! अफसोस इस बात का है कि यदि मुझ जैसे दो, चार व्यक्ति भी तुम्हारे साथी होते

अनाथ रीना ने होश संभाला तो पता चला वह एचआईवी पाजिटिव है

रीना 14 वर्ष की एक अनाथ बच्ची है जो अपने दादा-दादी के साथ रहती है। इसका एक छोटा भाई भी है। वह और उसका भाई अपने दादा-दादी के साथ ही रहते हैं। रीना के माता-पिता का देहांत 6 साल पहले ही हो चुका है। तब रीना मात्र 8 वर्ष की थी। रीना की मां एचआईवी पाजिटिव थी। जब उसका टेस्ट हुआ था जब वो अत्यधिक बीमार हालत में थी। रीना के पिता का एचआईवी टेस्ट नहीं हो पाया था, क्योंकि वह पहले ही इस दुनिया को छोड़ चुके थे।

मां के एचआईवी पाजिटिव आ जाने पर जब बच्चों का टेस्ट हुआ तो रीना भी एचआईवी पाजिटिव आई, जबकी उसका भाई एचआईवी नेगिटिव आया। इसी जांच के दौरान रीना की मां का भी देहांत हो गया पहले तो सब ठीक ठाक चलता रहा।

रीना के दादा-दादी को भी उसको दवाई खिलाने की समस्या सामने आने लगी। जब वे एआरटीसी में दवाई लेने आए तो उनकी मुलाकात केयर एंड सपोर्ट सैंटर के कर्मचारी से हुई। वह उन्हें सीएचसी में लेकर आ गए। यहां सीएचसी के काऊंसलर ने रीना के दादा- दादी से बात की और उन्हें समझाने के बाद उनसे कहा कि वे अगली बार रीना को अपने साथ ले कर आएं।

साथ में यह सभी सुनिश्चित हुआ कि उसी दिन सीएससी में बच्चों की स्पोर्ट- ग्रुप- मिंटिग भी की जाएगी। फिर निर्धारित समय और दिंनाक पर रीना अपने दादा-दादी के साथ मिंटिग में आई। पहले उसे सब बच्चों के साथ मिलाया गया। फिर उन बच्चों के साथ बात हुई और सबने अपने -2 बारे में बताया। तत्पश्चात सब बच्चों को एचआईवी के विषय में फ्लीप चार्ट्स प्रयोंगो के माध्यम से बताया गया। अंत में जब सब बच्चे एचआईवी के विषय में जान गए तो उन्हें बताया गया कि वे भी एचआईवी के साथ जी रहे हैं। इसी के चलते उन्हें नियमित तौर पर दवाइयां खानी पड़ रही हैं।

उन्हें यह भी बताया गया कि उन्हें क्या- क्या और कब-कब खाना चाहिए। अब रीना भी समझ चुकी थी कि वह एचआईवी की दवा खा रही है। यह दवाई उसे निश्चित रूप से खानी ही है। अब जब भी रीना अपने दादा-दादी के साथ आती है तो केयर एंड स्पोर्ट सेंटर में जरूर आती है। रीना की दादी बताती है कि रीना ने दोबारा उनसे कभी नहीं पूछा कि वह किस चीज की दवाई खाती है।

सफलता की कहानी

एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए जरूरी टूल्स टुगेदर नाऊ!

पीएलए फेसिलिटेटर कौन हो सकता है

कोई भी व्यक्ति पीएलए फेसिलिटेटर हो सकता है। स्थानीय एनजीओ के सदस्य, सामुदायिक संगठन या सेवा प्रदाता संगठन के प्रतिनिधि, कोई भी पीएलए फेसिलिटेटर हो सकता है। व्यक्ति की उम्र, जेंडर या सामाजिक-आर्थिक हैसियत से भी कोई फर्क नहीं पड़ता। ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति के पास सही ज्ञान, निपुणता, रवैया और व्यवहार हासिल करने की क्षमता हो और वह एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए उन्हें आत्मविश्वास के साथ लागू करने में सक्षम हो।

आदर्श रूप से पीएलए फेसिलिटेटर ऐसा व्यक्ति होना चाहिए:

जिस पर संबंधित समुदाय व समूह के सदस्य विश्वास करते हों जो उस समुदाय की स्थानीय भाषा बोल सकता हो समूह या समुदाय की संस्कृति को समझता हो लोगों से सीखने के प्रति इच्छुक हो और उसमें दिलचस्पी लेता हो जिस समूह को फेसिलिटेट किया जा रहा है उसके सदस्यों की उम्र, जैंडर, यौनिकता के अनुरुप हो अपने समुदाय में एचआईवी/एड्स की स्थिति को संबोधित करने के प्रति समर्पित हो एचआईवी/एड्स के मुद्दों का मूलभूत ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो एचआईवी/एड्स से ग्रस्त लोगों, गरीबों, पुरुषों के साथ संभाग करने वाले पुरुषों, नशीली दवाइयां, लेने वालों या सेक्स वर्कर्स जेसे हाशियायी समूहों के निकट जाने और उनसे सम्मानपूर्वक काम करने के लिए तैयार हो जो पीएलए टूल्स का इस्तेमाल करने में दक्ष हो (या जिसके पास उनका प्रशिक्षण लेने की संभावना जिसके पास पीएलए को फेसिलिटेट करने के लिए सही रवैया व व्यवहार हो (या जो उन्हें अर्जित करने की क्षमता रखता हो)जो पीएलए प्रक्रियाओं की योजना बनाने, मानिटर करने और मूल्यांकन करने में सक्षम हो (या इन निपुणताओं को अर्जित करने में सक्षम हो)जो साक्षर हो ताकि वह उन जानकारियों को दर्ज कर सके जिनसे एचआईवी/एड्स पर सामुदायिक कार्रवाई की योजना बनाने और उसे चलाने में मदद मिल सकती है।

पीएलए फेसिलिटेटर्स की क्या भूमिकाएं होती हैं

पीएलए फेसिलिटेटर्स का मुख्य काम समुदाय के व्यक्तियों, समूहों और संगठनों का सशक्तीकरण करना होता है ताकि वे मिलजुल कर अपने जीवन व परिस्थितियों को खुद विश्लेषण कर सकें और यह समझ सकें कि एचआईवी/एड्स से उन पर किस प्रकार के प्रभाव पड़ रहे हैं। इस विश्लेषण के आधार पर ही फेसिलिटेटर्स उन्हें एक योजना बनाने, उस योजना के अनुसार कार्रवाई करने, मानिटरिंग करने, मूल्यांकन करने में मदद करते हैं।

इस काम को अंजाम देने के लिए पीएलए फेसिलिटेटर्स को एक साथ कई भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं:

पीएलए प्रक्रियाओं की योजना बनाना-

पीएलए फेसिलिटेटर्स को पीएलए प्रक्रियाओं की रूपरेखा तैयार करनी पडती है। इन प्रक्रियाओं से लोगों को मिलजुल कर विश्लेषण, नियोजन, कार्रवाई, मानिटरिंग और मूल्यांकन करने की काबिलियत मिलती है।

पीएलए प्रक्रियाओं का फेसिलिटेटर-

पीएलए फेसिलिटेटर्स को चाहिए कि वे लोगों को खुद अपने विश्लेषण, नियोजन, कार्रवाई, मानिटरिंग और मूल्यांकन में समान रूप से हिस्सेदारी करने के लिए प्रोत्साहित करें।

सहभागिता के लिए वकालत करना-

पीएलए फेसिलिटेटर्स को चाहिए कि वे पीएलए प्रक्रियाओं में सभी एचआईवी/एड्स प्रभावितों की सहभागिता सुनिश्चित करें।

समूहों को मोबिलाइज करने वाला-

पीएलए फेसिलिटेटर्स को समुदायों के सभी व्यक्तियों, समूहों और संगठनों को साथ लाकर उनका क्षमता निर्माण करना चाहिए और उन्हें एचआईवी/एड्स को संबोधित करने के लिए विश्लेषण, नियोजन, कार्रवाई, मानिटरिंग और मूल्यांकन के लिए प्रेरित करना चाहिए।

परस्पर विश्वास बनाने वाला-

पीएलए फेसिलिटेटर्स को चाहिए कि वे लोगों, समूहों और संगठनों के बीच परस्पर विश्वास पैदा करें क्योंकि उनके विचार और प्राथमिकताएं अलग-अलग हो सकती हैं।

सूचनाओं का आदान-प्रदान करने वाला-

पीएलए फेसिलिटेटर्स को चाहिए कि वे पीएलए को एचआईवी/एड्स के बारे में सटीक जानकारियां उपलब्ध करानी चाहिए तथा उचित कार्रवाइयों के बारे में बताना चाहिए।

इन सारी भूमिकाओं को निभाने के लिए पीएलए फेसिलिटेटर्स को सही ज्ञान, निपुणता, रवैया और व्यवहार विकसित करना पड़ता है। अगले भाग में बताया गया है कि ये गुण क्या हैं और उन्हें कैसे अर्जित किया जा सकता है।

पीएलए फेसिलिटेटर्स के लिए जरूरी निपुणता, ज्ञान, रवैया और व्यवहार

पीएलए को सही ढंग से फेसिलिटेट करने कि लिए फेसिलिटेटर के पास ये गुण होना जरूरी है:

ध्यान से सुनने का गुण
सही ढंग से सवाल पूछने का गुण
सामूहिक चर्चाओं को फेसिलिटेट करने की क्षमता
सही रवैया और व्यवहकार जिससे सहभागिता, शिक्षा और गतिविधियों को प्रोत्साहन मिले
एचआईवी/एड्स संबंधी मुद्दो का ज्ञान
पीएलए टूल्स का ज्ञान और उनके इस्तेमाल का तरीका
टीम के रूप में काम करने की योग्यता
पीएलए सत्रों की योजना बनाने का ज्ञान

हम अगले अंक में पढ़ेंगे कि इन निपुणताओं, ज्ञान, रवैये और व्यवहारों को किस तरह विकसित किया जा सकता है।

आई.ई.सी. मेटिरियल डिवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

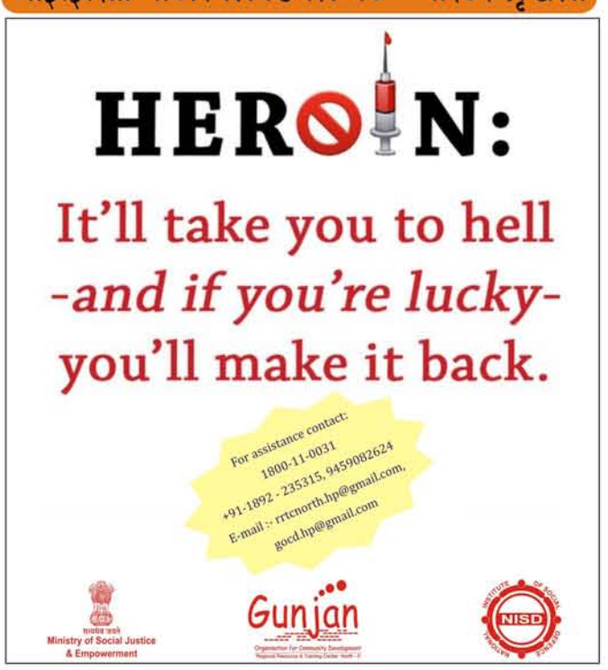

इंटरव्यू में काम आएंगी ये छोटी-छोटी बातें

जब भी हमें कोई इंटरव्यू देने जाना होता है, तो हम बिना किसी प्रिपरेशन के चले जाते हैं। जबकि इंटरव्यू में बहुत सी छोटी-छोटी लेकिन महत्वपूर्ण बातों का ख्याल रखना जरूरी होता है। आइए जानते हैं कुछ टिप्स :

इंटरव्यू में जाने से पहले:

इंटरव्यू में जाने से पहले आपको अक्सर पूछे जाने वाले सवालों के जवाब अच्छे से पता होने चाहिए। आप जिस संस्थान में जा रहे हैं, उसके बारे में बेसिक जानकारी बेहद जरूरी है। अपनी सीवी और एप्लीकेशन फार्म को एक बार अच्छे से चेक कर लें।

क्या लेकर जाएं:

इंटरव्यू के लिए जाते समय आपको क्या ले जाना है, यह जरूर पता होना चाहिए। आपको आपका सीवी, एक पानी की बोतल, पैसे, पेन और नोट पैड, एक फोटो, ड्राइविंग लाइसेंस और मोबाइल फोन ले जाना चाहिए।

ऐसे डालें अच्छा इम्प्रेशन:

- इंटरव्यू में पूछे गए सवालों के जवाब साफ और छोटे होने चाहिए।
- कोशिश करें कि अपनी पर्सनल प्रॉब्लम डिस्कस ना करें।
- अपने आपको जोश से भरा हुआ दिखाएं।
- पूरे स्टाफ से अच्छे से बर्ताव करें।
- चेहरे पर हल्की सी मुस्कान और बातों में पॉजिटिविटी दिखाएं।
- जहां पहले काम कर चुके हैं, वहां के बारे में किसी भी प्रकार की कोई बुराई ना करें।
- आपके शूज पॉलिश किए हुए हों और कपड़े साफ-सुथरे होने चाहिए।

बड़ा खतरा है बीमारी के वायरस का बदलना

असल में वायरस संबंधी बीमारियों या समस्याओं के ऐसे बदले स्वरूप के पीछे अन्य कई परिवर्तन शामिल हैं और इनमें सबसे प्रमुख है बीमारी के वायरस का ही बदल जाना। केवल वायरस ही नहीं बीमारी या संक्रमण पैदा करने वाले ऐसे कई स्रोत व कीटाणु अब पहले की तुलना में अपनी संरचना को परिवर्तित कर चुके हैं। यही वजह है कि उनके लक्षणों और इलाज में भी बदलाव आ गया है। बदलाव के अन्य कारणों में शामिल हैं-

पर्यावरण में बदलाव

-भोजन के स्रोत और पानी के स्रोतों में रसायनिक मिलावट और अशुद्धता

-तमाम तरह के प्रदूषण

-जीवनशैली में परिवर्तन के कारण होने वाले जेनेटिक परिवर्तन

-दिनचर्या में असंतुलन, आदि

इस तरह के परिवर्तनों के कारण ही आजकल सामान्य वायरल इन्फेक्शंस भी न केवल लंबे समय तक बने रहते हैं, बल्कि इनका इलाज भी करवाने की जरूरत पड़ती है। इतना ही नहीं कई बार इन्हें नजरअंदाज करना स्थिति को गंभीर या जानलेवा भी बना सकता है। वायरल फीवर से लेकर स्वाइन फ्लू और अन्य कई संक्रमणों में यही बात सामने आ रही है।

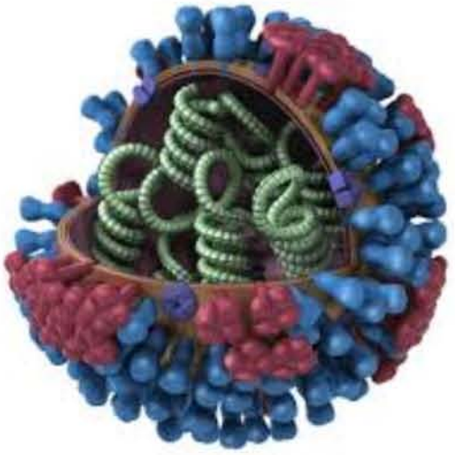

समस्याएं और बदले हुए लक्षण

एक समय था जब सामान्य सर्दी-जुकाम का इलाज घरेलू स्तर पर बिना किसी दवाई के कर लिया जाता था। उपचार के लिए आराम करने पर जोर दिया जाता था और यह तथ्य था कि एक हफ्ते या दस दिन के अपने समयकाल के बाद जुकाम-सर्दी और हरारत अपने आप खत्म हो जाएंगे लेकिन आजकल ऐसा होने में मुश्किल आती है। अब न केवल यह समय सीमा बढ़ जाती है बल्कि लक्षण इतने तीव्र होते हैं कि दवाई लिए बिना काम नहीं चलता। दरअसल पिछली पीढ़ियों के हिसाब से अब वायरस की आने वाली नस्ल भी नई तकलीफों से लैस होती है। इसलिए साधारण इलाज इनपर उस तरह असर नहीं कर पाता।

इन लक्षणों से रहें सतर्क

-सामान्य उपायों के बावजूद हफ्ते भर में जुकाम बिल्कुल भी ठीक न हो या स्थिति पहले दिन जैसी ही बनी रहें

-बुखार दवाई देने पर भी न उतरे

-बुखार के साथ बार-बार उल्टी या दस्त भी हों, या आंव-खून के दस्त हों

-सिर के एक हिस्से में लगातार दर्द रहे

-पैरों, पीठ या जोड़ों में विशेष दर्द या कमजोरी आ जाए

-भूख में एकदम कमी आ जाए और पानी तक पीना मुश्किल हो

-पेशाब की मात्रा में कमी और रंग का बदलना, आदि

ये बातें भी जरूरी

-पोषक और संतुलित खान-पान जिनमें जिंक जैसे खनिज और विटामिन डी और सी जैसे तत्व अवश्य शामिल हों

-बच्चों और बड़ों के संदर्भ में सही वैक्सीन यानी टीकों की जानकारी और उनका उपयोग

-गर्भवती महिलाओं के मामले में सही जांच और टीकों का उपयोग

-हाइजीन और स्वच्छता का पूरा ध्यान रखना

-यदि घर में किसी एक को संक्रमण हो तो सतर्कता और सही इलाज अपनाना। बीमारी में आराम करना

-नियमित जीवनशैली, व्यायाम और भरपूर पानी पीने पर ध्यान देना

-प्रदूषण की रोकथाम में भूमिका निभाना, आदि।

भारत में पहली पेशेवर मुक्केबाजी को मिली मंजूरी

भारत को पेशेवर मुक्केबाजी को बढ़ावा देने की कवायद में विश्व मुक्केबाजी संघ (डब्ल्यूबीए) ने भारतीय मुक्केबाजी परिषद (आईबीसी) के तत्वावधान में पहली पेशेवर फाइट के लिए मंजूरी दे दी। छह मुकाबले सीरी फोर्ट खेल परिसर में होंगे। इसमें राष्ट्रीय स्तर के भारतीय मुक्केबाज भाग लेंगे। डब्ल्यूबीए के अधिकारियों की निगरानी में ये मुकाबले खेले जाएंगे। डब्ल्यूबीए चार अंतरराष्ट्रीय महासंघों में से है, जो पेशेवर मुक्केबाजी में टाइटल मुकाबलों को मंजूरी देता है।

डब्ल्यूबीए के क्षेत्रीय विकास सलाहकार स्टेनले क्रिस्टोडोलू ने कहा कि भारत पेशेवर मुक्केबाजी में बहुत प्रगति करेगा। आइबीसी जिस तरह से पेशेवर मुक्केबाजी को बढ़ावा दे रहा है, संघ उससे काफी प्रभावित हैं। यह भारत को पेशेवर मुक्केबाजी में महाशक्ति बनाने की दिशा में पहला कदम है। आईबीसी को तकनीकी मार्गदर्शन के जरिये सहयोग दिया जाएगा। उम्मीद है कि इन मुकाबलों से भविष्य के लिए विश्व चैंपियन निकलेंगे। डब्ल्यूबीए के दल में यूरोपीय समन्वयक मरियाना बोरिसोवा और मेडिकल आयोग के सदस्य डाक्टर जान हार्टले फ्लेमिंग शामिल थे। इन्होंने आइबीसी के तकनीकी अधिकारियों के लिए एक सेमिनार भी किया।

प्रीति जिंटा करेंगी अमेरिकी ब्वॉयफ्रेंड से शादी

वालीबुड अभिनेत्री प्रीति जिंटा अपने अमेरिकी ब्वॉयफ्रेंड से शादी करने जा रही हैं, लेकिन वो इसमें बेहद खास दोस्तों को ही बुलाएंगी। इसकी वजह है कि वो अपनी शादी की तस्वीरों को नीलाम करना चाहती हैं। प्रीति जिंटा की शादी को लेकर काफी समय से चर्चाएं हैं। लगातार प्रीति अपनी शादी की खबरों को नकारती रही हैं। हाल ही में ये साफ हो गया कि वो आने वाले हफ्ते में शादी कर लेंगी। लगातार कई परेशानियों से जूझ रहीं प्रीति की शादी को लेकर एक नई बात सामने आई है।

प्रीति जिंटा अमेरिका में एक बेहद निजी कार्यक्रम में शादी करेंगी। वो नहीं चाहतीं कि उनके और उनके अमेरिकी मंगेतर गेने के फोटो सबके सामने आएं। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार प्रीति अपनी शादी की इन तस्वीरों की नीलामी करेंगी। खास बात ये है कि इसके पीछे प्रीति की पैसा कमाने की मंशा नहीं है। प्रीति जिंटा अपनी शादी की तस्वीरों से होने वाली आमदनी को चैरिटी के लिए दान करेंगी। प्रीति जल्दी ही इस बारे में खुद बता सकती हैं।

इससे पहले हॉलीवुड की मशहूर जोड़ी ब्रेड पिट और एंजेलिना जॉली भी अपनी शादी की तस्वीरों को चैरिटी के लिए नीलाम कर चुके हैं। प्रीति जिंटा पिछले काफी समय से अमेरिकी ब्वॉयफेंड के साथ रिश्ते को लेकर चर्चा में हैं। प्रीति ने हमेशा ही इस रिश्तो को छुपा कर रखने की कोशिश की है। इसकी वजह प्रीति की आज की हालत भी है। लॉस एंजिल्स के अपने ब्वॉयफ्रेंड के साथ कुछ समय पहले प्रीति मुंबई के एक फाइव स्टार होटल में देखी गईं थीं।

नेस वाडिया से वो लंबे समय तक रिश्ते में ही। इस रिश्ते का अंत काफी खराब रहा और दोनों ने कई आरोप भी एक-दूसरे पर लगाए। इसके बाद से प्रीति ने अपनी निजी जिंदगी को सार्वजनिक जीवन से अलग रखने की कोशिश की है।

उनके रिश्ते को लेकर मीडिया में बातें ना बनें इसीलिए वो गुपचुप शादी करने जा रही हैं। इसमें बॉलीवुड से उनके खास दोस्त ही शामिल होंगे। इसमें सिर्फ दो नामों का अभी खुलासा हुआ है। प्रीति ने सुजैन खान और सलमान को अमेरिका में अपनी शादी में आने का न्यौता दिया है।

संपादक व प्रकाशक संदीप परमार द्वारा वीपीओ सिद्धबाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा-176057, हि.प्र. से प्रकाशित व संपादित और बज्रेश्वरी प्रिंटर्स वीपीओ घरोह, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा हिप्र. से मुद्रित। फोन नंबर: 01892-235315 Mail ID: badaltirahain@gmail.com